मिथिला की लोक कथाएं : भाग- 3

शेर की मौसी बिल्ली

विभा रानी

मिथिला की लोक कथाएं

भाग- 3

शेर की मौसी बिल्ली

विभा रानी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: दिसंबर, 2023

© विभा रानी

अपनी बात

मिथिला की लोक कथाएँ किस्सागोई के अनुपम उदाहरण हैं। प्रस्तुत किताब के कुछ किस्से मैंने अपनी पंड़ाइन चाची से सुने थे, कुछ इधर-उधर भटकते हुए और कुछ मैंने गढ़े थे- तब, जब मेरी बेटियाँ छोटी थीं और हर रात सोते समय उन्हें एक किस्सा सुनाने की आदत मैंने ही डाली थी। अपने स्टॉक के किस्से खत्म और वे अलादीन के जिन्न की तरह सामने- 'कहानी सुनाओ।' बच्चों की याददाश्त भी उतनी ही तेज होती है। आप उन्हें एक ही किस्सा दुबारा यह कहकर नहीं सुना सकते कि नया है। वे तुरंत दिन, तारीख समय के साथ बता देंगे कि कब यह कहानी उन्होंने सुनी थी।

लोक कथाएँ शायद ऐसे ही कही- सुनी गई होंगी। बच्चे दादी- नानी के पास सोते समय किस्सों की फरमाइश करते होंगे। दादी- नानी किस्से गढ़ती होंगी। वैसे भी हर स्त्री में किस्सागोई भरी होती है। यह स्पष्ट कर दूँ कि लोक कथाएँ केवल बच्चों के लिए नहीं होती हैं। इनकी सरलता हमें भ्रमवश बच्चों तक का मान लेती हैं, जबकि कौन नहीं जानता कि विजयदान देथा यानी बिज्जी ने राजस्थान की लोक कथाओं को कितनी बखूबी साहित्य और स्त्री विमर्श से जोड़ा है। इसलिए ये कथाएँ सभी के लिए हैं।

यह दीगर बात है कि बच्चों को कथा सुनाते समय बड़ा सुकून मिलता है। उनके लिए लिखते समय और भी। बच्चों जैसी मुस्कान अपने आप चेहरे पर आती रहती है। लगता है, हम खुद बच्चे हो गए। और हों भी क्यों न! हम सबके मन के भीतर कहीं न कहीं एक बच्चा बैठा तो रहता ही है न, जो मौका पाते ही चुपके से सर उठाकर इधर-उधर झाँकने लगता है।

'मिथिला की लोक कथाएँ, भाग- 1' कौआहंकनी' के नाम से नॉटनल पर मौजूद है। इसका तीसरा भाग 'शेर की मौसी बिल्ली' के रूप में आपके सामने है। सभी कथाएं दिलचस्प हैं। मुझे विश्वास है कि इन लोक कथाओं को भी आप पसंद करेंगे, अपने या किसी भी बच्चे के लिए इसे लेना, उन्हें भेंट करना, पढ़ना, पढ़कर बच्चों, यहां तक कि बड़ों को भी सुनाना चाहेंगे।

नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव का आभार। उनके सौजन्य से यह किताब आपके समक्ष है।

विभा रानी

मुंबई

सूची

बुढ़िया और पहलवान	5
स्वर्ग और नर्क	9
चींटी की शान	12
कटता नहीं तो मरता नहीं	16
आए थे हरि भजन को…	20
एक से भले तीन	26
बिना विचारे जो करे…	32
शेर की मौसी बिल्ली	34
क्या खाऊं, का पीऊं, का ले परदेस जाऊं	38
हाथी और चुहिया	48

बुढ़िया और पहलवान

एक पहलवान था। बहुत ही तेज और फुर्तीला। उसे पहलवानी के सारे दांव- पेंच आते थे। इसकी वजह से उसका बड़ा नाम हो गया था। जब वह अखाड़े में उतरता, तब उसे देखने के लिए दूर-दूर के गांवों और बस्तियों से लोग आते। कोई भी पहलवान उसके सामने टिक नहीं पाता था।

वह सबसे ताकतवर है, इस बात को जानकर वह घमंड से भर गया। और आप तो जानते हैं कि जब घमंड आता है, तब इंसान की सुबुद्धि खत्म हो जाती है। यही पहलवान के साथ भी हुआ। लिहाजा, वह अपनी ताकत का इस्तेमाल लोगों की मदद के बदले उनलोगों को सताने के लिए करने लगा। उसकी ताकत से डरकर लोग कुछ नहीं बोल पाते थे।

एक बार गांव में मेला लगा। पहलवान भी वहां पहुंचा। उसके पहुंचते ही मेले में हड़कंप मच गया। पहलवान इस हड़कंप को देखकर बहुत खुश हुआ। वह खाने-पीने की दुकानों पर जाकर बिना पैसे दिए खाने लगा। बाकी दुकानों से उसने अपनी पसंद की चीजें उठा लीं। जिसने भी पैसे मांगे, उनकी दुकानें तोड़ फोड़ दीं, दूकानदारों को खूब मारा पीटा। आनंद और खुशहाली का प्रतीक मेला पलक झपकते ही घायलों और सताए हुए लोगों की चीख-पुकार से भर उठा।